कीरतनी

आसा दी वार

ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

कीरतनी

आसा दी वार

सारग महला ४ ।।

हरि हरि अंम्रित नामु देहु पिआरे ।। जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे।। १ ।। रहाउ।। जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे ।। अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ।। १ ।। हिरदै नामु अंम्रित रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ।। गुरपरसादि अंम्रित रसु चीनिआ ओइ पावहि मोख दुआरे।। २ ।। सतिगुर पुरखु अचलु अचला मति जिसु द्रिड़ता नामु अधारे ।। तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे।। ३ ।। मनमुखि भ्रमि दूजै भाइ लागै अंतरि अगिआन गुबारे ।। सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरिवारि न पारे।। ४ ।। सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला कलधारे ।। नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे।।५।।३।।

ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

आसा महला ४

छंत घरु ४।।

हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे।। मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना।। गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना।। जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ।। १ ।।

ੴ १ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

आसा महला १ ।।

वार सलोका नालि सलोक भी महले पहले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी

सलोकु मः १ ।।

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार।। जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ।। १ ।। महला २ ।। जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ।। एते चानण होदिआ गुर बिनु घोर अंधार ।। २ ।। मः १ ।। नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत।। छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ।। खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ।। फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ।। ३।।

पउड़ी ।।

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ।। दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ।। दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ।। तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ।। करि आसणु डिठो चाउ ।।१ ।।

गोंड महला ४ ।।

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ त्रिखावंतु बिनु नीर ।। १ ।। मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर।। हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ।। २।। मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ।। ३ ।। जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ।। ४।। ६ ।। छका १

हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ।। जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ।। जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ।। जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ।। २।।

सलोकु मः १ ।।

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ।। सचे तेरे लोअ सचे आकार ।। सचे तेरे करणे सरब बीचार ।। सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ।। सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ।। सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ।। सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ।। सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ।। सची तेरी सिफति सची सालाह ।। सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ।। नानक सचु धिआइनि सचु ।। जो मरि जंमे सु कचु निकचु ।। १।।

मः १ ।।

वडी वडिआई जा वडा नाउ ।। वडी वडिआई जा सचु निआउ ।। वडी वडिआई जा निहचल थाउ ।। वडी वडिआई जाणै आलाउ ।। वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ।। वडी वडिआई जा पुछि न दाति ।। वडी वडिआई जा आपे आपि ।। नानक कार न कथनी जाइ ।। कीता करणा सरब रजाइ ।। २ ।।

महला २ ।।

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ।। इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ।। इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ।। एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ।। नानक गुरमुखि जाणीऐ जाकउ आपि करे परगासु ।। ३ ।।

पउड़ी ।।

नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ।। ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ।। थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह कालै दोजकि चालिआ ।। तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ।। लिखि नावै धरमु बहालिआ ।। २।।

सोरठि महला ५ ।।

हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ।। हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ।। १।। माधो हम ऐसे तू ऐसा ।। हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ।। रहाउ ।। तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ।। निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ।। २ ।। तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ।। तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ।। ३ ।। तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ।। कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ।। ४।। ६ ।।

हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ।। गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ।। मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ।। मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ।। ३ ।।

सलोकु मः १ ।।

विसमादु नाद विसमादु वेद ।। विसमादु जीअ विसमादु भेद ।। विसमादु रूप विसमादु रंग ।। विसमादु नागे फिरहि जंत ।। विसमादु पउणु विसमादु पाणी ।। विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ।। विसमादु धरती विसमादु खाणी ।। विसमादु सादि लगहि पराणी ।। विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ।। विसमादु भुख विसमादु भोगु ।। विसमादु सिफति विसमादु सालाह ।। विसमादु उझड़ विसमादु राह ।। विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ।। विसमादु देखै हाजरा हजूरि ।। वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ।। नानक बुझणु पूरै भागि ।। १ ।।

मः १ ।।

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुखसारु ।। कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ।। कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ।। कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ।। कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ।। कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ।। कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ।। सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ।। नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ।। २ ।।

पउड़ी ।।

आपीनै भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ।। वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ।। अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ।। थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ।। मनि अंधै जनमु गवाइआ ।। ३ ।।

सोरठि महला ५ ।।

सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ।। राखु पैज नाम अपुने की करन करावन हारे ।। १।। प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ।। बुरे भले हम थारे ।। रहाउ ।। सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ।। पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ।। २ ।।

दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ रामराजे ।। हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ।। भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ।। जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ।। ४ । ८।। १५ ।।

सलोकु मः १ ।।

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ।। भै विचि चलहि लख दरीआउ ।। भै विचि अगनि कढै वेगारि ।। भै विचि धरती दबी भारि ।। भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ।। भै विचि राजा धरम दुआरु ।। भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ।। कोह करोड़ी चलत न अंतु ।। भै विचि सिध बुध सुर नाथ ।। भै विचि आडाणे आकास ।। भै विचि जोध महाबल सूर ।। भै विचि आवहि जावहि पूर ।। सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ।। नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ।। १।। मः १ ।। नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ।। केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ।। केते नचहि मंगते गिड़िमुड़ि पूरहि ताल ।। बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ।। गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ।। लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ।। जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ।। गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु

।। करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ।। २ ।। पउड़ी ।। नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ।। एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ।। सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ।। सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ ।। जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ।। जिनि सचो सचु बुझाइआ ।। ४।।

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ।। संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ।। सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ।। इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ।। मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ।। हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ।। हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितिअनु जाइ ।। संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ।। जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ।। फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ।। १३ ।।

आसा महला ४ ।।

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ।। कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ।। हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ।। धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ।। १ ।।

सलोक मः १ ।।

घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ।। गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ।। सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ।। नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ।। १।। मः १।। वाइनि चेले नचनि गुर ।। पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ।। उडि उडि रावा झाटै पाइ ।। वेखै लोकु हसै घरि जाइ ।। रोटीआ कारणि पूरहि ताल ।। आपु पछाड़हि धरती नालि ।। गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ।। गावनि सीता राजे राम ।। निरभउ निरंकारु सचु नामु ।। जाका कीआ सगल जहानु ।। सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ।। भिंनी रैणि जिना मनि चाउ ।। सिखी सिखिआ गुर वीचारि ।। नदरी करमि लघाए पारि ।। कोलू चरखा चकी चकु ।। थल वारोले बहुतु अनंतु ।। लाटू माधाणीआ अनगाह ।। पंखी भउदीआ लैनि न साह ।। सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ।। नानक भउदिआ गणत न अंत ।। बंधन बंधि भवाए सोइ ।। पइऐ किरति नचै सभु कोइ ।। नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ।। उडि न जाही सिध न होहि ।। नचणु कुदणु मन का चाउ ।। नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ।। २ ।। पउड़ी ।। नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ।। जीउ पिंडु सभु तिसदा दे खाजै आखि गवाईऐ ।। जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ।। जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ।। को रहै न भरीऐ पाईऐ ।। ५ ।।

राग गउड़ी ।।

पंथु निहारै कामनी लोचन भरीलै उसासा ।। उर न भीजै पगु न खिसै हरि दरसन की आसा ।। १ ।। उडहु न कागा कारे ।। बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ।। १ ।। रहाउ ।। कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ।। एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ।।२ ।। १।। १४ ।। ६५ ।।

पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ।। हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ।। मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ।। जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ।। २।।

सलोक मः १ ।।

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ।। बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ।। हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ।। तीरथि नावहि अरचा

पूजा अगर वासु बहकारु ।। जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ।। सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ।। सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ।। दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ।। चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ।। इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काईकार ।। जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ।। ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ।। नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ।। सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पाछारु ।। १।। मः १।। मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ।। घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ।। जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ।। नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ।। २ ।।

पउड़ी ।।

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ।। सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ।। सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ।। उतमु इहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ।। जग जीवनु दाता पाइआ ।। ६ ।।

(वडहंसु महला ४ छंत)

कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ।। हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ।। हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ।। मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ।। हरि हरि क्रिपा करहु सुख दाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ।। कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरू पूरा ।। ३ ।।

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ।। मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ।। मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ।। हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ।। ३ ।।

सलोक मः १ ।।

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ।। हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ।। हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ।। हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ।। हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ।। हउ विचि पाप पुंन वीचारु ।। हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ।। हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ।। हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ।। हउ विचि जाती जिनसी खोवै ।। हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ।। मोख मुकति की सार न जाणा ।। हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ।। हउमै करि करि जंत उपाइआ ।। हउमै बूझै ता दरु सूझै ।। गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ।। नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ।। जेहा वेखहि तेहा वेखु ।। १।।

महला २ ।। हउमै एहा जाति है हउमै करमि कमाहि ।। हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ।। हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ।। हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ।। हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ।। किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ।। नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ।। २ ।।

पउड़ी ।। सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ।। ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ।। ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ।। तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ।। वडिआई वडा पाइआ ।। ७ ।।

गउड़ी की वार महला ५ ।। पउड़ी ।।

अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ।। जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ।। करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ।। सगल मनोरथ पुंनिआ अमरापदु पाई ।। तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ।। ३।।

गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ।। जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके ।। गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ।। हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ।। ४ ।। ९ ।। १६ ।।

सलोक मः १ ।।

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ।। दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ।। अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ।। सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ।। नानक जंत उपाइकै संमाले सभनाह ।। जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ।। सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ।। तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ।। नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ।। १।। **मः १** ।। लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ।। लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ।। लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ।। लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ।। जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ।। नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ।। २ ।। पउड़ी ।। सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ।। जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ।। सतिगुरि मिलीऐ सचु पाइआ जिन्हकै हिरदै सचु वसाइआ ।। मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ।। विचि दुनीआ काहे आइआ ।। ८ ।।

रामकली की वार महला ५ ੧ॐ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

सलोकु मः ५ ।।

जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ।। विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ।। हरि नामो मंत्रु द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ।। नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ।।

आसा महला ४ ।।

हरि अंम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ।। गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ।। धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ।। जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ।। १ ।।

सलोकु मः १ ।।

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ।। पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ।। पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ।। पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ।। नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ।। १ ।। **म : १** ।। लिखि लिखि पड़िआ ।। तेता कड़िआ ।। बहु तीरथ भविआ ।। तेतो लविआ ।। बहु भेख कीआ ।। देही दुखु दीआ।। सहु वे जीआ अपणा कीआ ।। अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ।। बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ।। बसत्र न पहिरै ।। अहिनिसि कहरै ।। मोनि विगूता ।। किउ जागै गुर बिनु सूता ।। पग उपेताणा ।। अपणा कीआ कमाणा ।। अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ।। मूरखि अंधै पति गवाई ।। विणु नावै किछु थाइ न पाई ।। रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ।। अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ।। सतिगुर भेटे सो सुखु पाए ।। हरि का नामु मंनि वसाए ।। नानक

नदरि करे सो पाए ।। आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ।। २।। **पउड़ी** ।। भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ।। नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ।। इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ।। हउ ढाढीका नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ।। तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ।। ९ ।।

आसा घरु ८ काफी महला ५ ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

मै बंदा बैखरीदु सचु साहिबु मेरा ।। जीउ पिंडु सभु तिसदा सभु किछु है तेरा ।। १ ।। माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ।। बिनु साचे अनटेक है सो जाणहु काचा ।। १ ।। रहाउ ।। तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ।। जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ।। २ ।। चतुराई सिआणपा कितै काम न आईऐ ।। तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ।। ३ ।। जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ।। जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ।। ४ ।। १ ।। १०३ ।।

सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ।। सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ।। जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ।। जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ।।२ ।।

सलोकु मः १ ।।

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ।। कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसण हारु ।। कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हण हारु ।। कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ।। कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ।। कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ।। किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ।। कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ।। नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ।। १।। **मः १** ।। सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ।। कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ।। सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ।। नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ।। सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ।। धरति काइआ साधिकै विचि देइ करता बीउ ।। सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ।। दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ।। सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ।। सतिगुरू नो पुछिकै बहि रहै करे निवासु ।। सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ।। नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ।। २ ।।

पउड़ी ।। दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ।। कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ।। फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ।। जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ।। मति थोड़ी सेव गवाईऐ ।। १० ।।

सूही महला ५ ।।

किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ।। बैखरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ।। १ ।। लाल रंगीले प्रीतम मन मोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम सदा सदा उपकारे ।। सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ।। २ ।। किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ।। मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ।। ३ ।। पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ।। जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ।। ४ ।। ६ ।।

हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ।। हरि नामु सलाहह दिनु राति एहा आस

आधारो ।। हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ।। जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ।। ३ ।।

सलोकु मः १ ।।

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ।। बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ।। जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ।। नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ।। भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ।। नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ।। १ ।। **मः १** ।। लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ।। कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ।। अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ।। गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ।। ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ।। मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ।। धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ।। जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ।। सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ।। पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ।। २ ।। **मः १** ।। वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ।। सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ।। अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ।। जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ।। ३ ।। **पउड़ी** ।। धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ।। एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ।। इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ।। गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ।। सहजे ही सचि समाइआ ।।११।।

कलिआण महला ४ ।।

प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे ।। हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ।। १ ।। रहाउ ।। हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ।। सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ।। १ ।। जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ।। मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ।। २ ।। जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ।। जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ।। ३ ।। हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे ।। जानु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ।। ४ ।। ६ ।। छका १ ।।

जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ।। हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ।। हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ।। जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ।।४।। १० ।। १७ ।।

सलोकु मः १ ।।

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ।। तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ।। १ ।। बलिहारी कुदरति वसिआ ।। तेरा अंतु न जाई लखिआ ।। १ ।। रहाउ ।। जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ।। तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ।। कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ।। २ ।। **मः २** ।। जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ।। खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं पराक्रितह ।। सरब सबदं एक सबदं जेको जाणै भेउ ।। नानकु ताका दासु है सोई निरंजन देउ ।। ३ ।। **मः २** ।। एक क्रिसनं सरब देवा देव देवात आतमा ।। आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ।। नानकु ताका दासु है सोई निरंजन देउ ।। ४ ।। **मः १**

।। कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ।। गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ।। ५ ।। **पउड़ी** ।। पड़िआ होवै गुनहगारु त ओमी साधु न मारीऐ ।। जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ।। ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ।। पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ।। मुहि चलै सु अगै मारीऐ ।।१२ ।।

आसा महला ५ ।।

अनिक भांति करि सेवा करीऐ ।। जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ।। पानी पखा करउ तजि अभिमानु ।। अनिक बार जाईऐ कुरबानु ।। १ ।। साई सुहागणि जो प्रभ भाई ।। तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ।। १ ।। रहाउ ।। दासनि दासी की पनिहारि ।। उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ।। माथै भागु न पावहु संगु ।। मिलै सुआमी अपुनै रंगि ।। २ ।। जाप ताप देवउ सभ नेमा ।। करम धरम अरपउ सभ होमा ।। गरबु मोहु तजि होवउ रेन ।। उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ।। ३ ।। निमख निमख एही आराधउ ।। दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ।। भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ।। साध संगि नानक बखसिंद ।। ४ ।। ३३ ।। ८४ ।।

आसा महला ४ ।।

जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ।। अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ।। हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ।। जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ।। १ ।।

सलोकु मः १ ।।

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ।। जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ।। सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ।। त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ।। दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ।। कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ।। १ ।। **मः १** ।। साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ।। सभु को सचि समावै ।। रिगु कहै रहिआ भरपूरि ।। राम नामु देवा महि सूरु ।। नाइ लइऐ पराछत जाहि ।। नानक तउ मोखंतरु पाहि ।। जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ।। पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ।। कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ।। नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ।। चारे वेद होए सचिआर ।। पड़हि गुणहि तिन चार वीचार ।। भाउ भगति करि नीचु सदाए ।। तउ नानक मोखंतरु पाए ।। २ ।।

पउड़ी ।। सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ।। जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ।। खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ।। सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ।। करि किरपा पारि उतारिआ ।। १३ ।।

तिलंग महला ९ काफी ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

चेतना है तउ चेत लै निसिदिनि मै प्रानी ।। छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ।। १ ।। रहाउ ।। हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ।। झूठै लालचि लागिकै नहि मरनु पछाना ।। १ ।। अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ।। कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ।। २ ।। १ ।।

जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ।। इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ।। हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ।। मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए।।२।।

सलोकु मः १ ।।

सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ।। ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे

कितु ।। फल फिके फुल बक बके कंमि न आवहि पत ।। मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ।। सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ।। धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ।। अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ।। सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ।। १ ।। **मः १** ।। पड़ि पुसतक संधिआ बादं ।। सिल पूजसि बगुल समाधं ।। मुखि झूठ बिभूखण सारं ।। त्रैपाल तिहाल बिचारं ।। गलि माला तिलकु लिलाटं ।। दुइ धोती बसत्र कपाटं ।। जे जाणसि ब्रहमं करमं ।। सभि फोकट निसचउ करमं ।। कहु नानक निहचउ धिआवै ।। विणु सतिगुर वाट न पावै ।। २ ।।

पउड़ी ।। कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ।। मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ।। हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ।। नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ।। करि अउगण पछोतावणा ।। १४ ।।

माझ महला ५ ।।

तूं मेरा पिता तूं है मेरा माता ।। तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ।। तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ।। १ ।। तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ।। तूं मेरी ओट तूं है मेरा माणा ।। तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ।। २ ।। जीअ जंत सभि तुधु उपाए ।। जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ।। सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ।। ३ ।। नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ।। हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ।। गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ।। ४ ।। २४ ।। ३१ ।।

तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ।। किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ।। जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ।। जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ।।३ ।।

सलोकु मः १ ।।

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ।। एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ।। ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ।। धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ।। चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ।। सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ।। ओहु मुआ ओहु झड़ि पिआ वेतगा गइआ ।। १ ।। **मः १** ।। लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ।। लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ।। तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ।। कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ।। होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाइऐ होरु ।। नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ।। २ ।। **मः १**।। नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ।। दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ।। ३ ।। **मः१** ।। तगु न इंद्री तगु न नारी ।। भलके थुक पवै नित दाड़ी ।। तगु न पैरी तगु न हथी ।। तगु न जिहवा तगु न अखी ।। वेतगा आपे वतै ।। वटि धागे अवरा घतै ।। लै भाड़ि करे वीआहु ।। कढि कागलु दसे राहु ।। सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ।। मनि अंधा नाउ सुजाणु ।। ४ ।।

पउड़ी ।। साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ।। सो सेवकु सेवा करे जिसनो हुकमु मनाइसी ।। हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु त खसमै का महलु पाइसी ।। खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ।। ता दरगह पैधा जाइसी ।। १५ ।।

महला १ ।।

न भीजै रागी नादी बेदि ।। न भीजै सुरती गिआनी जोगि ।। न भीजै सोगी कीतै रोजि ।। न भीजै

रूपीं मालीं रंगि ।। न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ।। न भीजै दांती कीतै पुंनि ।। न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ।। न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूरि ।। न भीजै केते होवहि धूड़ि ।। लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ।। नानक भीजै साचै नाइ ।। २ ।।

कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ।। जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ।। हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ।। जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ।। ४।। ११ ।। १८ ।।

सलोक मः १ ।।

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ।। धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ।। अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ।। छोडीले पाखंडा ।। नामि लइऐ जाहि तरंदा ।। १ ।। **मः १** ।। माणस खाणे करहि निवाज ।। छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ।। तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ।। उन्हा भि आवहि ओई साद ।। कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ।। कूड़ु बोलि करहि आहारु ।। सरम धरम का डेरा दूरि ।। नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ।। मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ।। हथि छुरी जगत कासाई ।। नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ।। मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ।। अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ।। चउके उपरि किसै न जाणा ।। दे कै चउका कढी कार ।। उपरि आइ बैठे कूड़िआर ।। मतु भिटै वे मतु भिटै ।। इहु अंनु असाडा फिटै ।। तनि फिटै फेड़ करेनि ।। मनि जूठै चुली भरेनि ।। कहु नानक सचु धिआईऐ ।। सुचि होवै ता सचु पाईऐ ।। २ ।। **पउड़ी** ।। चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ।। आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ।। वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ।। नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ।। दरि मंगनि भिख न पाइदा ।। १६ ।।

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ।। जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ।। १ ।। रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ।। विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ।। १ ।। रहाउ ।। आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ।। तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ।। २ ।। परवदगार अपार अगम बेअंत तू ।। जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ।। ३ ।। तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ।। सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ।। ४ ।। १ ।।

आसा महला ४ ।।

जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ।। जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ।। हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ।। जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ।। १ ।।

सलोकु मः १ ।।

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ।। अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोरि करेइ ।। वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ।। नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ।। १ ।।

मः १ ।। जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ।। जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ।। सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ।। सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ।। २ ।। **पउड़ी** ।। तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ।। कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ।। चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ।। करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ।। जरु आई जोबनि हारिआ ।। १७ ।।

मः ४ ।।

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ।। से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ।। धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ।। धनु धंनु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ।। हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ।। २ ।।

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ।। गुर सिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ।। गुर सिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ।। जिन नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ।। २ ।।

सलोकु मः १ ।।

जेकरि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ।। गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ।। जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ।। पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ।। सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ।। नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ।। १ ।। **मः १** ।। मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ।। अखी सूतकु वेखणा परत्रिअ परधन रूपु ।। कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ।। नानक हंसा आदमी बधे जमपुरि जाहि ।। २ ।। **मः १** ।। सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ।। जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ।। खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ।। नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ।। ३ ।। **पउड़ी** ।। सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ।। सहि मेले ता नदरी आईआ ।। जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ।। करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआइआ ।। सहि तुठै नउनिधि पाईआ ।। १८ ।।

बिलावलु महला ५ ।।

मू लालन सिउ प्रीति बनी ।। ऱहाउ ।। तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ।। १ ।। दिनसु रैनि मन माहि बसतु है ।। तू करि किरपा प्रभ अपनी ।। २ ।। बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जाकी बात सुनी ।। ३ ।। जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु क्रिपा ठाकुर अपुनी ।। ४ ।। २८ ।। ११४ ।।

गुर सिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ।। करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ।। गुर सिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ।। जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ।। ३ ।।

सलोकु मः १ ।।

पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ।। सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ।। सुचा होइकै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ।। कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ।। अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ।। ता होआ पाकु पवितु ।। पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ।। जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ।। नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ।। १ ।। **मः १** ।। भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ।। भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ।। भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ।। **सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान** ।। भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ।। नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ।। जितु मुखु सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ।। नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ।। २ ।। **पउड़ी** ।। सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो

चुणि कढीऐ ।। कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ।। जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ।। मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ।। मूरखै नालि न लुझीऐ ।। १९ ।।

गउड़ी महला ५ ।।

प्रभ मिलबे को प्रीति मन लागी ।। पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ।। १ ।। रहाउ ।। मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ।। जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ।। १ ।। पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ।। मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ।। २ ।। २ ।। ११९ ।।

गुर सिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ।। कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुर सिखा मनि मिठा ।। हरि दरगह गुर सिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ।। जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ।। ४ ।। १२ ।। १९ ।।

सलोकु महला १ ।।

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ।। फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ।। फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ।। फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ।। १ ।। **मः १** ।। अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ।। अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ।। जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ।। तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ।। रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ।। परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ।। दरिवाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ।। दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ।। दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ।। २ ।। **पउड़ी** ।। आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ।। देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ।। जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ।। जिसके जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ।। आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ।। २० ।।

मलार महला ४ ।।

जिन्ह के हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति ।। तिन देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सदि बलि जांत ।। १ ।। गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ।। तिन की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खांति ।। १ ।। रहाउ ।। हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भरांति ।। जिउ जल दुध भिंन भिंन काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ।। २ ।। जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ।। तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खांति ।। ३ ।। हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखांति ।। धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तरांति ।। ४ ।। ५ ।।

आसा महला ४ ।।

जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे ।। तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ।। जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ।। जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ।। १ ।।

सलोकु महला २ ।।

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ।। नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ।। चंगै

चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ।। आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ।। १ ।। **महला २** ।। सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ।। नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ।। २ ।। **पउड़ी** ।। जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ।। जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ।। मंदा मूलि न कीचई दे लांमी नदरि निहालीऐ ।। जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ।। किछु लाहे उपरि घालीऐ ।। २१ ।।

टोडी महला ५ ।।

हरि के चरन कमल मनि धिआउ ।। काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ।। १ ।। रहाउ ।। तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ।। ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जाकी प्रभ आगै अरदासि ।। १ ।। संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ।। बाल बुधि पूरन सुख दाता नानक हरि हरि टेक ।। २ ।। ८।। १३ ।।

जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ।। जिनी सतिगुर पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ।। जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ।। जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिना मिलिआ हरि सोई ।। २ ।।

सलोकु महला २ ।।

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ।। गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ।। आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ।। नानक जिसनो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ।। १ ।। **महला २** ।। जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ।। बीजे बिखु मंगै अंम्रितु वेखहु एहु निआउ ।। २ ।। **महला २** ।। नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ।। जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ।। वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ।। साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ।। कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ।। ३ ।। **महला २** ।। नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ।। पाणी अंदरि लीक जिउ तिसदा थाउ न थेहु ।। ४ ।। **महला २** ।। होइ इआना करे कंमु आणि न सकै रासि ।। जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ।। ५।। **पउड़ी** ।। चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ।। हुरमति तिसनो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ।। खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ।। वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ।। जिसदा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ।। नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ।। २२ ।।

गउड़ी कबीर जी ।।

निंदउ निंदउ मोकउ लोगु निंदउ ।। निंदा जन कउ खरी पिआरी ।। निंदा बापु निंदा महतारी ।। १ ।। रहाउ ।। निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ।। नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ।। रिदै सुध जउ निंदा होइ ।। हमरे कपरे निंदकु धोइ ।। १ ।। निंदा करै सु हमरा मीतु ।। निंदक माहि हमारा चीतु ।। निंदकु सो जो निंदा होरै ।। हमरा जीवनु निंदकु लोरै ।। २ ।। निंदा हमरी प्रेम पिआरु ।। निंदा हमरा करै उधारु ।। जन कबीर कउ निंदा सारु ।। निंदक डूबा हम उतरे पारि ।। ३ ।। २०-७१ ।।

जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन हरि रखणहारा राम राजे ।। तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन हरि नामु पिआरा ।। जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ।। जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ।। ३ ।।

सलोकु महला २ ।।

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ।। नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ।। १

।। **महला २** ।। एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ।। नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ।। २ ।। **पउड़ी** ।। नानक अंत न जापन्ही हरि ताके पारावार ।। आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ।। इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ।। आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ।। नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ।। २३ ।।

ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

रागु सूही महला ३ घरु ३ ।।

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ।। सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ।। हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिसदी साची बाणी ।। सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ।। भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ ।। नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ।। १ ।।

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ।। हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ।। अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नाम देउ मुखि लाइआ ।। जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ।। ४ ।। १३ ।। २० ।।

सलोकु मः १ ।।

आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ।। इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ।। इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ।। तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ।।१।। **महला २** ।। आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ।। तिसु विचि जंत उपाइकै देखै थापि उथापि ।। किसनो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ।। २ ।। **पउड़ी** ।। वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ।। सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ।। साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ।। नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ।। सो करे जि तिसै रजाइ ।। २४ ।। १ ।।

सुधु ।।

((((((((((((((((((------))))))))))))))))))